2 OCT 6 2026.qxd 01-10-2026 19:19 Page 1

प्रतिरोधका प्रभाव

भारत निर्वाचन आयोगने ३० सितम्बरको मतदाता सूचीके विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की प्रक्रियामें महत्वपूर्ण परिवर्तन करते हुए उन राज्योंमें फार्म-६ से जुड़ी अतिरिक्त घोषणाको हटाकर राहतकारी कदम उठाया है। आयोगने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि यह घोषणापत्र अब केवल उन्हीं राज्योंमें लागू रहेगा, जहां एसआईआरका कार्य चल रहा है। घोषणापत्रमें मतदाताके माता, पिता, दादा आदिकी मतदाता सूचीके बारेमें जानकारी मांगी जाती थी। घोषणापत्रमें जानकारी देनेके बाद किसी अन्य दस्तावेजकी आवश्यकता नहीं रह जाती है। अबतक उत्तर प्रदेश सहित २० राज्योंमें एसआईआर पूरा हो चुका है। १२ राज्योंमें यह प्रक्रिया चल रही है। २० राज्योंमें अब कोई नया मतदाता जुड़ना चाहता है तो उसे घोषणापत्र नहीं भरना होगा लेकिन शेष दस्तावेज देने होंगे। एक अंग्रेजी दैनिक समाचारपत्रकी रिपोर्टमें दावा किया गया है कि दो चुनाव आयुक्तों विवेक जोशी और सुखबीर सिंह संधूने इसपर आपत्ति जतायी थीं। अब सवाल उठता है कि चुनाव आयोगके इस कदमको किस रूपमें देखा जाना चाहिए? यह महत्वपूर्ण प्रशासनिक और लोकतांत्रिक कदम है या इस मुद्देपर उठे प्रतिरोधका प्रभाव है? यहींसे कानून प्रक्रिया और प्रशासनिक अधिकारको भी लेकर सवाल उठते हैं। आयोगका निर्णय मुख्यत: एसआईआर और सामान्य मतदाता पंजीकरणके बीच अन्तरको स्पष्ट करता है। २६ सितम्बरको चुनाव आयोगकी बैठकके बाद आयोगने स्पष्ट किया था कि गैर-एसआईआर अवधिमें रजिस्ट्रेशन आफ इलेक्ट्रोस रूल्स, १९६० के अनुरूप सामान्य प्रपत्र इस्तेमाल किये जायंगे। फार्म-६ को लेकर राजनीतिक दलोंने कड़ी आपत्तियां जतायी थीं और नागरिक अधिकार तथा मतदाता पंजीकरणसे जुड़े प्रश्न सार्वजनिक बहसका विषय बन गये थे। चुनाव आयोगके ताजे निर्णयको एक सीमातक प्रतिरोधके प्रभावके रूपमें भी देखा जा सकता है। साथ ही इस निर्णयको प्रतिरोधके बाद पुनर्विचार या प्रशासनिक सुधारकी दिशामें कदमके रूपमें भी देखा जा सकता है। लेकिन इसे प्रतिरोधकी जीत घोषित करना अभी जल्दबाजी होगी। इस बदलावके बाद सबसे बड़ी आवश्यकता होगी कि आयोग एक समान, स्पष्ट और सार्वजनिक दिशा-निर्देश जारी करे। पूरे प्रकरणका बड़ा सन्देश यह है कि मतदाता सूची शुद्ध करने और मतदाताके अधिकारके बीच सन्तुलन बहुत ही आवश्यक है। पात्र नागरिकको मतदानके अधिकारोंसे वंचित नहीं किया जाय।

पायलटके शौर्यकी मिसाल

दुबईसे तेल अबीब जा रही फ्लाई दुबईकी उड़ानमें बुधवारको काकपिटमें हुई हिंसक झड़पके दौरान भारतीय पायलट कैप्टन स्मित मछारने जिस बहादुरीका परिचय देते हुए विमानपर नियंत्रण बनाये रखनेमें अहम भूमिका निभायी, उससे हर भारतीय गौरवान्वित है। उनकी साहस और सूझ-बूझने चाकूके कई वार झेलकर भी प्लेनको न सिर्फ क्रैश करानेकी साजिशको विफल किया, बल्कि उसे आपातकालीन स्थितिमें सऊदी अरबके तबुक हवाई अड्डेपर सुरक्षित उतार लिया। विमानमें क्रू मेम्बर समेत १८० यात्री सवार थे, जिनमें २७ बच्चे थे। इसमें बड़ी संख्यामें इसरायली नागरिक थे। सभी यात्रियोंकी जान बच गयी और एक बड़ा हादसा होते-होते टल गया। फ्लाई दुबईके विमान (एफजेड-१०७३) को हाईजैक कर क्रैश करानेकी कोशिश हुई। काकपिटमें ओमानी को-पायलटने भारतीय पायलट स्थित मछारपर चाकूसे अचानक हमला किया और विमान प्रणालियोंको नुकसान पहुंचाकर उसे गिरानेकी कोशिश की। उस समय विमान आसमानमें ३४ हजार फीटकी ऊंचाईपर था जब सह-पायलटने भारतीय पायलटपर हमला कर घायल कर दिया। यात्री विमानको दुर्घटनाग्रस्त होने बचानेके लिए भारतीय पायलटने जांबाजी दिखायी और हमलावर सह-पायलटसे काकपिटमें जानकी बाजी लगाकर भिड़ गये। इस दौरान विमान यात्री भी काकपिटमें पहुंच गये और हमलावर सह-चालकको काबूमें कर लिया गया। इस तरह हादसा तो टल गया लेकिन खतरा अब भी बना हुआ है। यह घटना सुरक्षासे जुड़ी गम्भीर मामला है। यह मामला पूरी तरह सुनियोजित था। सबसे बड़ा प्रश्न तो यह है कि ओमानके को-पायलटको उड़ान भरनेकी इजाजत कैसे मिली जबकि वह एक सालसे भी कम समयसे एयरलाइनके लिए काम कर रहा था। हमलावरके दोहरी नागरिकता भी शकके दायरेमें है जिस कारणसे वह इसरायल जाने वाली उड़ानमें शामिल हो पाया। यह कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका जवाब मिलना चाहिए। पूरे मामलेकी गहन जांच होनी चाहिए। प्लेनको क्रैश करानेकी कोशिश आत्मघाती हमला है। इसलिए आतंकी साजिशसे भी इनकार नहीं किया जा सकता है।

लोक संवाद

गांधीजीकी सत्यनिष्ठा

महोदय,-महोदय,-राष्ट्रपिता महात्मा गांधीकी ईमानदारी, स्पष्टवादिता, सत्यनिष्ठा और शिष्टताके कई किस्से प्रचलित हैं, जिनसे उनके विराट व्यक्तित्वकी स्पष्ट झलक मिलती है। ऐसी ही घटना दक्षिण अफ्रीकाकी है। एक प्रसिद्ध व्यापारी रुस्तम जी गांधी जीके मुवक्किल और निकटतम सहयोगी भी थे। वे अपने सभी कार्य अक्सर गांधी जीकी सलाहके अनुसार ही किया करते थे। कलकत्ता और बम्बईसे तब उनका काफी सामान आता था, जिसपर वे चुंगी चुराया करते थे। उन्होंने इस बातको गांधी जीसे छिपाये रखा। एक बार चुंगी अधिकारियों द्वारा उनकी यह चोरी पकड़ ली गयी और उनके जेल जानेकी नौबत आ गयी। वे दौड़े-दौड़े गांधी जीके पास पहुंचे और पूरा वृतांत उन्हें सुना डाला। गांधी जीने पूरी बात गौरसे सुननेके बाद उन्हें उनके अपराधके लिए फटकार लगायी और सलाह दी कि तुम सीधे चुंगी अधिकारियोंके पास जाकर अपना अपराध स्वयं कबूल कर लो, भले ही इससे तुम्हें जेल हो जाय। रुस्तम जी गांधी जीकी सलाह मानकर तुरंत चुंगी अधिकारियोंके पास पहुंचे और अपना अपराध स्वीकार कर लिया। चुंगी अधिकारी उनकी स्पष्टवादितासे प्रसन्न हुए और उन्होंने उनपर मुकद्दमा चलानेका विचार त्यागकर उनसे चुंगीकी बकाया राशिसे दुगुनी राशि वसूलकर उन्हें छोड़ दिया। **-मोनिका शर्मा, वाया ईमेल।**

गांधीके आदर्शोंको समझना जरूरी

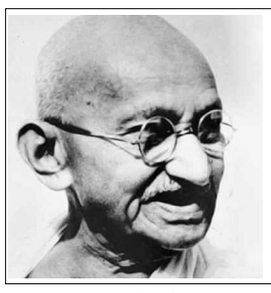
महात्मा गांधीको समझनेके लिए उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्वको सहज रूपसे समझना होगा। उनके विराट व्यक्तित्व, संघर्षों और सत्यके प्रति निष्ठाको सूक्ष्मतासे समझना होगा। गांधीजीने अपने जीवनको ऐसी प्रयोगशाला बनाया, जिसमें हर पलका सूक्ष्मतासे परीक्षण किया। इसलिए गांधीजीका जीवन ही उनका संदेश है।

❐ **अखिलेश आर्येन्दु**

महात्मा गांधीको समझनेके लिए उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व, जिसमें उनके बचपन, किशोरावस्था, जवानी, प्रौढ़ और जीवनकी अंतिम श्वासोंतककी उनसे संबद्ध छोटी-बड़ी घटनाओं, कार्यों, व्यवहारों, विचारों, स्वीकृतियों और अस्वीकारोंको सहज रूपसे समझना होगा। यह कौन नकार सकता है कि उनका जीवन अत्यंत संघर्षोंसे तप कर नहीं निकला था। उनका व्यक्तित्व असाधारण होते हुए भी सामान्य मानवकी कमजोरियों और संघर्षोंसे जुड़ा हुआ था। उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि वे जो करते, कहते और स्वीकारते हैं वह अकाट्य है। उन्होंने अपने जीवनमें हुई भूलोंको छिपानेके बजाय सार्वजनिक रूपसे स्वीकार किया। उनकी यह स्वीकारता उनके व्यक्तित्वको असाधारण बनाती है। वे दूसरोंको उपदेश देनेसे पहले स्वयंपर प्रयोग करते थे। सत्य और अहिंसा उनके लिए केवल बोलनेकी नैतिक नहीं थे, बल्कि जीवन जीनेकी पद्धति थे। उनका बचपन भारतमें अवश्य बीता लेकिन उच्च शिक्षा उनकी इंग्लैडमें हुई, लेकिन उनके ऊपर पाश्चात्य संस्कृति और मतका प्रभाव नहीं पड़ा। सादगी, शाकाहार, स्वच्छता और सत्यके प्रति अनुराग उनमें आजीवन बना रहा। दक्षिण अफ्रीकामें भारतीयोंके साथ होने वाले नस्लीय भेदभावने गांधीके जीवनकी दिशा बदल दी। उनके साथ दक्षिण अफ्रीकामें रेल यात्राके दौरान जब अमानवीय ढंगसे प्रथम श्रेणीके टिकट होनेके बावजूद उन्हें बाहर निकाल दिया गया। तब उन्हें अनुभव हुआ, नस्लीय भेदभाव किस स्तरतक अंग्रेज करते हैं। यह घटना केवल व्यक्तिगत अपमान नहीं थी, उसने उनके भीतर अन्यायके विरुद्ध संघर्षकी चेतनाको जन्म दिया। यहीसे उन्होंने सत्य, आत्मबल और अहिंसक प्रतिरोधका रास्ता खोजा। दक्षिण अफ्रीकासे १९१५ में वे भारत लौटे। इसके बाद भारतको समझनेके लिए वे गांव-गांव घूमे। किसानों और मजदूरोंकी समस्याओंको जाना-समझा। इसके बाद वे भारतीयोंके साथ अंग्रेजों द्वारा किये जा रहे अन्यायके खिलाफ आन्दोलनके जरिये प्रतिरोध करनेका निर्णय लिया। चंपारण, खेड़ा और अहमदाबादके आन्दोलनोंने उन्हें भारतीय राजनीतिके केन्द्रमें ला दिया। चंपारणमें नीलकी खेतीके लिए किसानोंपर होने वाले अत्याचारके विरुद्ध उनका संघर्ष केवल राजनीतिक आन्दोलन नहीं था। वह यह था कि गांधी राजनीतिको समाजके सबसे कमजोर व्यक्तिके जीवनसे जोड़ना चाहते थे। असहयोग आन्दोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आन्दोलनने ब्रिटिश शासनके विरुद्ध भारतीय जनमानसको व्यापक रूपसे संघटित किया। १९३० का दाण्डी मार्च विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। नमक जैसी सामान्य वस्तुको गांधीने औपनिवेशिक शासनके विरुद्ध जन-प्रतिरोधका प्रतीक बना दिया। यह गांधीकी राजनीतिक कल्पनाशीलताका उदाहरण था- उन्होंने सामान्य भारतीयके नैतिक जीवनसे जुड़ी चीजको राष्ट्रीय आंदोलन का आधार बना दिया। ऐसा गांधी ही कर सकते थे। उनके लिए स्वतंत्रताका अर्थ केवल अंग्रेजी शासनसे मुक्ति नहीं था। स्वतंत्रताका अर्थ था-गरीब, किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, पिछड़े, वंचित व्यक्तिके जीवनमें सम्मान और अधिकारकी स्थापना। वे चाहते तो सुख-सुविधाओं वाली जिन्दगी जी सकते थे, लेकिन उन्होंने देशके सबसे कमजोर व्यक्ति वाला जीवन जीनेका फैसला किया। जिससे उनका जीवन हर किसीके लिए प्रेरक बन सका।

गांधीके व्यक्तित्वका सबसे प्रभावशाली पक्ष उनकी सादगी थी। उनका मानना था कि जिस देशकी जनता गरीबीमें जिन्दगी बसर कर रही हो, उसके नेताका अत्यधिक वैभवमें रहना नैतिक और सामाजिक रूपसे उचित नहीं है। इसी तरह चरखा उनके लिए मात्र सूत कातनेका उपकरण नहीं था। वह आत्मनिर्भरता, शारीरिक श्रमकी प्रतिष्ठा और आर्थिक स्वराजका प्रतीक था। वे आधुनिक औद्योगीकरणके मौजूदा रूपके विरोधी नहीं थे, लेकिन वे ऐसी अर्थव्यवस्थासे चिंतित थे जिनमें उत्पादनका उद्देश्य मनुष्यकी आवश्यकताओंकी पूर्तिके बजाय असीमित उपभोग और मुनाफा बन जाय। स्वदेशी उनके आर्थिक चिन्तनका आधार बिन्दु था। उनका आर्थिक चिन्तन आज भी इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्होंने विकासको केवल उत्पादन और सकल घरेलू उत्पादके आंकड़ोंसे नहीं देखा। उनका 'अंत्योदय' का विचार इसी संवेदनासे जुड़ा था-निर्णय लेते समय सबसे कमजोर और सबसे अंतिम व्यक्तिके हितको ध्यानमें रखना। सत्यके साथ वे अहिंसाको प्रबलताके साथ स्वीकारते थे। सत्यके प्रति आग्रह उनके व्यक्तित्वकी केन्द्रीय विशेषता थी। वे सत्यको केवल बोलनेतक सीमित नहीं करते थे। सत्य उनके लिए नैतिक साहसका आधार था। इसी तरह अहिंसा गांधीके विचारोंका दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ थी। लेकिन अहिंसाको कमजोरी समझना गांधीको समझनेकी भूल होगी। हिंसाका सहारा लेना आसान हो सकता है, लेकिन अन्यायका सामना करते हुए हिंसासे बचना और फिर भी संघर्ष जारी रखना अत्यंत कठिन है। उनके आन्दोलनोंमें अहिंसाका यही सिद्धांत दिखाई देता है।

गांधीका मानना था कि साधन और साध्यको अलग नहीं किया जा सकता है। यदि लक्ष्य अच्छा है तो उसके लिए अपनाये गये साधन भी मूल्यपरक होने चाहिए। वे कहते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्त करनेके लिए यदि समाज हिंसा, घृणा और प्रतिशोधको अपना ले तो राजनीतिक स्वतंत्रता मिलनेके बावजूद समाज भीतरसे स्वतंत्र नहीं हो सकता है। इसी तरह राजनीतिके विषयमें उनका मत था कि राजनीति सत्ता प्राप्त करनेका माध्यम नहीं, समाजकी सेवाका साधन होनी चाहिए। गांधीका राष्ट्रवाद संकीर्ण नहीं था। वे भारतकी स्वतंत्रता तो चाहते थे, लेकिन दूसरोंसे घृणाके आधारपर नहीं। वे मानते थे कि भारतकी स्वतंत्रताका मकसद दुनियासे अलग होना नहीं होना चाहिए। देशको स्वतंत्र करानेके साथ-साथ वे समाजको सुधारना भी चाहते थे, लेकिन उनकी इस संबंधमें सोच तत्कालीन अन्य समाज सुधारकोंसे भिन्न थी। छुआछूत, जन्मगत भेदभावको उन्होंने राष्ट्रीय विमर्शका हिस्सा बना दिया। गांधीके व्यक्तित्व और कृतित्वका ठीक-ठीक मूल्यांकन तभी होगा जब उनके योगदानके साथ उनकी सीमाओं और आलोचनाओंपर भी इमानदारीसे विचार किया जाय। धर्मके विषयमें गांधीका विचार तत्कालीन समाज सुधारकोंसे भिन्न था। वे धर्मको परम्पराओंसे जोड़ते चलते हैं, लेकिन उसे साम्प्रदायिकतावादसे अलग करते हैं। वे मानते थे कि धर्मका उद्देश्य मानवको सत्य, करुणा और नैतिकताकी ओर ले चलना होना चाहिए। धर्म घृणा, अन्याय, हिंसा, शोषण और असहिष्णुता नहीं सिखाता। उनका आहार-विहार, आचार-विचार, कार्य, नीति, सिद्धांत और व्यवहार लचीला और समझौतावादी था। शाकाहारी होते हुए भी वे मांसाहारीको मांस खानेसे मना नहीं करते थे। जबकि अहिंसा उनके जीवनका दूसरा सबसे बड़ा वैचारिक और व्यावहारिक हथियार था। आत्म-परिवर्तन और ब्रह्मचर्यका परीक्षण उनके जीवनका एक नया प्रयोग था। उन्होंने हर विचार, कार्य और सिद्धांतको जीवनकी प्रयोगशालामें जांचा-परखा। सबसे बड़ी बात उनके जीवनकी यह थी कि उन्होंने अपनी कमियोंको भी दुनियाके सामने बिना छिपाये, उजागर किया। उनका जन्म और मृत्यु-दोनों विश्व समाजके लिए प्रेरणाके स्रोत बने। आज जब दुनिया संकटोंसे गुजर रही है-युद्ध, आतंकवाद, आर्थिक असमानता, पर्यावरण संकट, उपभोकतावाद और सामाजिक अविश्वास लगातर बढ़ रहे हैं। ऐसेमें गांधीके विचार, सिद्धांत जन-जीवनको प्रेरणा देनेका कार्य कर सकते हैं। महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीनने गांधीके ७०वें जन्मदिनपर १९३९ में कहा था जो आज भी प्रासंगिक है। आइंस्टीन गांधीके सम्पूर्ण व्यक्तित्वको रेखांकित करते हुए कहा था-'आने वाली पीढ़ियोंके लिए शायद यह विश्वास करना कठिन होगा कि ऐसा कोई व्यक्ति कभी सचमुच इस धरतीपर हाड़-मांसके शरीरमें चला था।



गांधी आज इसलिए प्रासंगिक नहीं हैं कि उनके हर विचारको बिना प्रश्न किये स्वीकार कर लिये जाय। वे इसलिए प्रासंगिक हैं कि उन्होंने मानवको अपने जीवनकी जिम्मेदारी लेनेकी चुनौती दी। गांधीका सबसे बड़ा संदेश शायद यही है कि विचार तभी प्रभावशाली बनते हैं जब वे जीवनमें दिखाई दें। सत्यकी बात करने वाला व्यक्ति स्वयं सत्यके प्रति ईमानदार हो। अहिंसाकी बात करने वाला व्यक्ति अपने व्यवहारमें भेदभाव न करे। इस दृष्टिसे गांधी केवल इतिहासके एक अध्याय नहीं हैं। वे एक प्रश्न हैं- हम अपने जीवनमें सत्य, अहिंसा, सादगी, सेवा और आत्मसंयमके लिए कितनी जगह रखते हैं।

देशके सच्चे सपूत शास्त्रीजी

पाकिस्तानके साथ १९६५ में हुए युद्धमें शास्त्रीजी द्वारा दिखायी गयी दृढ़ताके लिए उनकी बहुत प्रशंसा हुई। शास्त्रीजीको उनकी सादगी, देशभक्ति और ईमानदारीके लिए आज भारत श्रद्धापूर्वक याद करता है। शास्त्रीजी भारतकी श्रेष्ठ पहचान हैं।

❐ **सदानन्द शास्त्री**

सरलता और सादगीकी मिसाल भारतके दूसरे प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जीका जन्म २ अक्तूबर, १९०४ को उत्तर प्रदेशके मुगलसरायके रामनगरमें एक साधारण परिवारमें हुआ। वे इतने मेधावी थे कि मात्र दस सालकी उम्रमें उन्होंने छठी कक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। आगेकी पढ़ाईके लिए वे बनारस आ गये। विद्यार्थी जीवनमें ही राष्ट्रभक्तों और शहीदोंके बारेमें पढ़ते हुए इन्होंने स्वतंत्रतासंग्रामके विषयमें विस्तारसे जाना। इन्ही दिनों जलियांवाला बागकी घटनाके पश्चात 'छात्र आन्दोलन' ने गति पकड़ ली और शास्त्री जी इसका हिस्सा बन गये। शास्त्री जी महात्मा गांधीसे अत्यधिक प्रभावित थे। गांधी जीके नेतृत्वमें चल रहे असहयोग आन्दोलनमें शमिल होनेके लिए देशवासियोंसे आह्वान किया, इस समय इनकी आयु मात्र १६ थी। उन्होंने गांधी जीके आह्वानपर अपनी पढ़ाई छोड़ देनेका निर्णय किया और आन्दोलनमें हिस्सा लिया। जिसके चलते उन्हें १९२१ में जेल भी जाना पड़ा। देशको स्वतंत्र करानेके क्रममें उन्हें अपने जीवनके सात वर्ष कारावासमें गुजारने पड़े। आजादीके इन संघर्षोंने इन्हें पूर्णत: परिपक्व बना दिया। शास्त्री जीने राजनीतिमें प्रेवशके माध्यमसे देशकी दिशा एवं दशाको बदलनेका प्रयास किया। वस्तुत: वर्ष १९३७ में प्रांतीय विधानसभाओंके चुनावोंमें उन्होंने उत्तर प्रदेश विधानसभाकी सदस्यता प्राप्त की। इसी क्रममें आजादीके पश्चात सत्तामें आयी कांग्रेसने राष्ट्रीय स्वतंत्रतासंग्रामके नेता लाल बहादुर शास्त्रीका महत्व समझ लिया। परिणामस्वरूप वर्ष १९४७ में उन्हें उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडलमें मंत्रीके रूपमें शमिल कर लिया गया। वर्ष १९५१ में वह पार्टी महासचिव बनें। तद्पश्चात शास्त्री जीको रेलवे एवं यातायातके केन्द्रीयमंत्रीके रूपमें चुना गया। किन्तु इसी समय वर्ष १९५५ में दक्षिण भारतके 'अरियल' के समीप रेल दुर्घटनामें कई लोग हताहत हुए जिसके लिए स्वयंको जिम्मेदार मानते हुए उन्होंने रेलमंत्रीके पदसे इस्तीफा दे दिया। रेल दुर्घटनापर लम्बी बहसका जवाब देते हुए उन्होंने कहा-शायद मेरे लम्बाईमें छोटे एवं विनम्र होनेके कारण लोगोंको लगता है कि मैं बहुत दृढ़ नहीं हो पा रहा हूं यद्यपि शारीरिक रूपसे मैं मजबूत नहीं हूं लेकिन मुझे लगता है कि मैं आंतरिक रूपसे इतना कमजोर भी नहीं हूं।

गौरतलब हैं कि १९५७ में वह इलाहाबाद संसदीय क्षेत्रसे चुने गये। उन्हें पुन: यातायात विभाग दिया गया और साथ ही साथ उद्योग और वाणिज्य विभागोंका मंत्री भी बनाया गया। वर्ष १९६१ में उन्हें भारतके स्वराष्ट्रमंत्रीके रूप में और भ्रष्टाचार निरोधक समितिके लिए नियुक्त किया गया। इसी समय भारत-चीन युद्धसे सकते में आये नेहरू जीका साथ देनेके लिए शास्त्री जीको बिना विभागके मंत्रीके रूपमें मंत्रिमंडलमें शामिल कर लिया गया। यहां शास्त्री जीने भारतकी जनतासे अपील करते हुए कहा-जब हमारी स्वतंत्रता और अखंडता खतरेमें हो तो पूरी शक्तिसे उस चुनौतीका मुकाबला करना ही एकमात्र कर्तव्य होता है। हमें एकजुट होकर किसी भी प्रकारके अपेक्षित बलिदानके दृढ़तापूर्वक तत्पर रहना चाहिए ताकि उस चुनौतीका हम बेहतर तरीकेसे मुकाबला कर सके। शास्त्री जीने समाजके वंचित वर्गोंके लिए भी उल्लेखनीय कार्य किया। वे लाललाजपतराय द्वारा स्थापित सर्वेण्ट्स ऑफ इंडिया सोसायटी (लोक सेवा मंडल) के आजीवन सदस्य बने। जहां उन्होंने पिछड़े वर्गोंके उत्थानके लिए कार्य करना शुरू किया और बादमें वे उस सोसायटीके अध्यक्ष भी बने। इसी तरह उन्होंने किसान एवं युवा वर्गको देशकी आर्थिक एवं सैनिक शक्तिके तौरपर देखा। श्री लाल बहादुर शास्त्रीने 'जय जवान जय किसान' का नारा भी दिया, जो आगे चलकर देशभक्तिका प्रतीक बन गया। शास्त्री जीके इस नारेका मुख्य उद्देश्य एक ओर जहां देशकी सैनिक शक्तिमें वृद्धि करनेका था वही दूसरी ओर देशकी आर्थिक स्थितिको मजबूत करने का रहा। शास्त्री जीने आनन्द (गुजरात) के 'अमूल दूध सहकारी समिति' का समर्थन और राष्ट्रीय डेयरी विकासका निर्माण करके श्वेत क्रांतिको बढ़ावा दिया। जिससे भारत दुग्ध उत्पादनके क्षेत्रमें अग्रणी बनकर उभरा। भारत-पाकिस्तान युद्धके दौरान (वर्ष १९६५) भारत खाद्य संकटके दौरसे गुजर रहा था। इस समस्याका समाधान हरित क्रांतिके माध्यमसे किया गया। नतीजन भारत खाद्यान्न निर्यात करने वाले देशोंमें शुमार हो गया। शास्त्री जी भारतके पड़ोसी देशोंके साथ अपने संबंधोमें हमेशा शांति एवं संतुलन बनाये रखनेका प्रयास करते थे। इसी क्रममें भारत-पकिस्तान युद्ध (१९६५) के संबंधमें ताशकन्द (तत्कालीन सोवियत संघ) में सोवियत राष्टपतिकी मध्यस्थतासे भारत तथा पाकिस्तानमें सुलह हुई। जिसके तहत १० जनवरी, १९६६ पाकिस्तानके राष्ट्रपति मोहम्मद अयूब खानके साथ युद्धको समाप्त करने हेतु ताशकंद घोषणा-पत्रपर हस्ताक्षर किये गये। ११ जनवरी १९६६ को ताशकन्दमें ही उनका निधन हो गया। शास्त्री जीने कई वर्षोंतक अपनी निस्वार्थ सेवा भावना, कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी एवं करुणा जैसे गुणोंके चलते जनताके बीच अपनी अलग पहचान बनायी। विनम्र, दृढ़ इच्छाशक्ति, सहिष्णु एवं जबरदस्त आतंरिक शक्तिके धनी शास्त्री जी लोगोंके बीच ऐसे शख्स बनकर उभरे, जिन्होंने लोगोंकी भावनाओंको समझा। इन्होंने अपने दूरदर्शी दृष्टिकोणके माध्यमसे भारतको विश्वपटलपर अलग पहचान दिलवायी। गांधी जीकी राजनीतिक शिक्षाओंसे प्रेरणा लेते हुए गांधी जीके लहजेमें ही एक बार शास्त्रीजीने कहा था-मेहनत प्रार्थना करनेके समान है।

शास्त्री जीके राजनीतिक दिग्दर्शकोंमें पुरुषोत्तमदास टंडन और पंडित गोविंद बल्लभ पंतके अतिरिक्त जवाहरलाल नेहरू भी शामिल थे। सबसे पहले १९२९ में इलाहाबाद आनेके बाद उन्होंने टंडन जीके साथ भारत सेवक संघकी इलाहाबाद इकाईके सचिवके रूपमें काम करना शुरू किया। इलाहाबादमें रहते हुए ही नेहरू जीके साथ उनकी निकटता बढ़ी। इसके बाद तो शास्त्री जीका कद निरन्तर बढ़ता ही चला गया और एकके बाद एक सफलताकी सीढ़ियां चढ़ते हुए वे नेहरू जीके मंत्रिमंडलमें स्वराष्ट्रमंत्रीके प्रमुख पदतक जा पहुंचे। १९६१ में स्वराष्ट्रमंत्रीके प्रभावशाली पदपर नियुक्तिके बाद उन्हें एक कुशल मध्यस्थके रूपमें प्रतिष्ठा मिली। जवाहरलाल नेहरूके बीमार पड़नेपर उन्हें बिना किसी विभागका मंत्री नियुक्त किया गया और नेहरूकी मृत्युके बाद जून १९६४ में वह भारतके प्रधान मंत्री बने। उन्होंने अपने प्रथम संवाददाता सम्मेलनमें कहा था कि उनकी पहली प्राथमिकता खाद्यान्न मूल्योंको बढ़नेसे रोकना है और उन्होंने ऐसा किया। उनके क्रियाकलाप सैद्धांतिक न होकर पूरी तरहसे व्यावहारिक और जनताकी आवश्यकताओंके अनुरूप थे। निष्पक्ष रूपसे देखा जाय तो शास्त्री जीका शासन काल बेहद कठिन रहा। भारतकी आर्थिक समस्याओंसे प्रभावी ढंगसे न निबट पानेके कारण शास्त्री जीकी आलोचना भी हुई, लेकिन जम्मू-कश्मीरके विवादित प्रांतपर पड़ोसी पाकिस्तानके साथ १९६५ में हुए युद्धमें उनके द्वारा दिखायी गयी दृढ़ताके लिए उनकी बहुत प्रशंसा हुई। उन्हें मरणोपरांत वर्ष १९६६ में भारत रत्नसे भी सम्मानित किया गया। शास्त्रीजीको उनकी सादगी, देशभक्ति और ईमानदारीके लिए आज भी पूरा भारत श्रद्धापूर्वक याद करता है। महात्मा गांधीके समान विचार रखने वाले श्री लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ पहचान हैं।



स्वभावके विपरीत

❐ **ओशो**

शार्टकट तो बिलकुल भी संभव नहीं है और दूसरी बात और ख्यालसे समझ लें, यात्रा इतनी लम्बी नहीं होगी। यात्रा होगी ही नहीं। करीब-करीब हालत ऐसी है कि एक आदमी सूरजकी तरफ पीठ करके खड़ा है और चलता जा रहा है। हजारों मील चल चुका है। हम उससे आज कहते हैं कि तू सूरजकी तरफ चल चुका हजार मील पीठ करके, इसलिए अंधेरेमें भटक रहा है और प्रकाशको खोजना चाहता है तो वह आदमी कहेगा कि क्या सूरजकी तरफ मुंह करनेके लिए मुझे हजार मील फिर चलना पड़ेगा। उससे हम कहेंगे, नहीं हजार मील नहीं चलना पड़ेगा। वह कहे कि क्या कोई शार्टकट हो सकता है कि दो-चार-पांच मील चलनेसे हो जाय। हम कहेंगे कि चलनेकी कोई जरूरत नहीं, तू सिर्फ रुख बदल ले, तू सिर्फ पीठ सूरजकी तरफ किये है, मुंह उधर कर ले। क्योंकि सूरज केवल एक स्थानमें बंधा हुआ नहीं है और जब तू सूरजकी तरफ पीठ करके जा रहा था तब भी सूरज तेरे पीछे साथ ही था। परमात्मा यदि कहीं एक जगह बंधा हुआ होता या स्वभाव कहीं कैद होता, हम उससे दूर निकल सकते थे। हम दूर नहीं निकल सकते हैं हम केवल पीठ ही कर सकते हैं। इसलिए कोई लाखों जन्मोंतक स्वभावसे पीठ किये रहा हो, कोई फर्क नहीं पड़ता। आज मुंह फेरनेको राजी हो गये, स्वभावमें प्रविष्ट हो जायगा। इसलिए न तो मैं कहता हूं कि उतना ही चलना पड़ेगा, जितना आप विपरीत चले हैं और न मैं कहता हूं कि कोई शार्टकट संभव है। शार्टकटकी तो कोई जरूरत ही नहीं है। क्योंकि चलना ही नहीं है, सिर्फ रुख बदलना है। ऐसा समझे कि इस कमरेमें अंधेरा भरा हो हजारों सालसे और हम कहें कि दीया जलाओ। कोई पूछे कि हजारों सालतक दीया जलाते रहेंगे तब अंधेरा मिटेगा। क्योंकि अंधेरा हजारों साल पुराना है और अभी दीया जलेगा तो एकदमसे कैसे अंधेरेको मिटायेगा। इतना पुराना अंधेरा कोई जल्दीका उपाय नहीं है तो हम उससे कहेंगे कि न तो देर लगेगी और न जल्दीका कोई सवाल है। क्योंकि दीया जला नहीं कि अंधेरा मिट जायगा। अंधेरेकी कोई प्राचीनता नहीं होती, अज्ञानकी कोई प्राचीनता नहीं होती। वह कितना ही समय रहा हो, उसकी पर्तें नहीं जमतीं। उसको काटना नहीं पड़ेगा। ज्ञानकी एक किरण और अंधेरा कट जाता है और अज्ञान छूट जाता है और ऐसा किसी व्यक्तिके साथ थोड़े ही है कि वह स्वभावसे दूर निकल गया है। सभी स्वभावसे दूर निकल गये हैं, परन्तु दूर निकलनेका इतना ही मतलब है कि वे पीठ करके चलते रहे हैं। वस्तुत: तो कोई स्वभावसे दूर नहीं निकल सकता। कैसे निकलेंगे। स्वभावका मतलब ही यह है कि जो आप हैं। स्वभावका अर्थ है जिसे अपनेसे अलग नहीं किया जा सकता। लाख उपायसे भी स्वभावसे भिन्न नहीं हो सकते। स्वभावसे विपरीत नहीं हो सकते।

जीवनका सौन्दर्य एवं सृष्टिका आधार है अहिंसा

❐ **स्वामी देवेंद्र ब्रह्मचारी**

आज दुनिया विज्ञान, तकनीक और आर्थिक प्रगतिके जिस दौरमें पहुंची है, उसीके समानांतर हिंसा, आतंकवाद, युद्ध, तनाव, असहिष्णुता और प्रतिस्पर्धाकी प्रवृत्तियां भी बढ़ी हैं। मनुष्यने प्रकृतिपर विजय पानेकी कोशिशमें स्वयं अपने भीतर अशांति पैदा कर ली है। राष्ट्रोंके बीच अविश्वास, समाजोंमें वैचारिक टकराव, परिवारोंमें तनाव, प्रतिशोध एवं प्रतिस्पर्धाका दबाव बढ़ रहा है। ऐसे समयमें अहिंसा केवल नैतिक आदर्श नहीं, बल्कि संतुलित जीवन और शांतिपूर्ण विश्व-व्यवस्थाकी अनिवार्य आवश्यकता बन गयी है। २ अक्तूबरको महात्मा गांधीकी जयंतीके अवसरपर मनाया जाने वाला अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस इसी आवश्यकताकी वैश्विक स्वीकृति है। संयुक्त राष्ट्र महासभाने २००७ में २ अक्तूबरको अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित किया था। प्रस्तावमें अहिंसाकी सार्वभौमिक प्रासंगिकता तथा शांति, सहिष्णुता, समझ और अहिंसाकी संस्कृतिको बढ़ावा देनेकी आवश्यकताको रेखांकित किया गया।

अहिंसा जीवनका सौंदर्य, मन, वचन और कर्मकी निर्मलता है। किसीके प्रति घृणा न रखना, अपमानजनक भाषासे बचना और व्यवहारसे दूसरेके मनको अनावश्यक पीड़ा न देना भी अहिंसा है। इसलिए अहिंसा संतुलित जीवनका आधार है। जहां हिंसा है वहां भय है, जहां भय है वहां तनाव और वहां सुख एवं शांतिका स्थायी निवास संभव नहीं। अहिंसाकी सबसे व्यापक और सूक्ष्म व्याख्या जैन दर्शनमें मिलती है। भगवान महावीरने अहिंसाको जीवन